पाठ-4

हिमालय

– घमण्डीलाल अग्रवाल

आइए सीखें

◆ आस्था एवं विश्वास का भाव ग्रहण करना ◆ कविता का हाव-भाव, सुर-लय एवं ताल के साथ वाचन ◆ उपसर्ग, पर्यायवाची एवं तत्सम शब्दों का परिचय ◆ मुहावरों का प्रयोग करने की समझ।

कितनी सदियाँ बीत चुकी हैं-
एक जगह पर खड़ा हिमालय!

रखवाली का वचन निभाए,
कर्त्तव्यों की कथा सुनाए।
अविचल और अडिग रहकर नित,
मुस्कानों के कोश लुटाए॥
भारतमाता के मस्तक पर-
लगे मुकुट-सा जड़ा हिमालय।
कितनी सदियाँ बीत चुकी हैं-
एक जगह पर खड़ा हिमालय॥

दुश्मन का मुख काला करता,
जन-जन की पीड़ा को हरता।
गंगा की धारा को लाए,
पर-हित में ही जीता रहता॥
गर्व हमें है पिता सरीखा-
ले मुकाबला अड़ा हिमालय।
कितनी सदियाँ बीत चुकी हैं-
एक जगह पर खड़ा हिमालय॥

शिक्षण संकेत

◆ शिक्षक पाठ पढ़ाने से पहले भारत का मानचित्र छात्रों को दिखाएँ ◆ मानचित्र में हिमालय एवं गंगा की स्थिति की चर्चा करें ◆ देशभक्ति एवं कर्तव्यनिष्ठा से सम्बन्धित अन्य कविताओं को छात्रों को सुनाएँ।

जड़ी-बूटियाँ मिलें यहाँ पर,
दृश्य यहाँ के सुंदर-सुखकर।
उत्तर दिशा देश की कायम,
खुश हो इसे देखकर अंबर॥
सतरंगी सपनों की आभा-
उम्मीदों का घड़ा हिमालय।
कितनी सदियाँ बीत चुकी हैं-
एक जगह पर खड़ा हिमालय॥

हमको रक्षा इसकी करनी,
कहती है यह हमसे जननी।
यह पहचान संस्कृति की है,
इसमें शान निहित है अपनी॥
नई सदी के देख करिश्मे-
लाज-शर्म से गड़ा हिमालय।
कितनी सदियाँ बीत चुकी हैं-
एक जगह पर खड़ा हिमालय॥

शब्दार्थ

सदी=सौ वर्ष का समय, शताब्दी। **वचन**=प्रतिज्ञा, वादा। **कोश**=भण्डार, खजाना। **मुख काला करना**=अपमानित करना। **पीड़ा हरना**=दुःख दूर करना। **परहित**=दूसरों की भलाई। **मुकाबला लेना**=सामना करना। **जड़ी-बूटियाँ**=औषधियों के रूप में प्रयुक्त होने वाली पेड़-पौधों की जड़े, पत्तियाँ, फल, बीज आदि। **अंबर**=आसमान, आकाश। **सतरंगी**=सात रंगों की। **आभा**=चमक। **उम्मीदों का घड़ा**=आशाओं का भण्डार। **जननी**=माँ, माता। **संस्कृति**=जीवनशैली, पारम्परिक आचार-विचार। **शान**=प्रतिष्ठा, मान। **निहित**=छुपी हुई, छुपा हुआ। **करिश्मे**=करतब, काम। **लाज**=शर्म से गड़ा-लज्जित, शर्मिन्दा।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **(क) सही जोड़ी बनाइए—**
   - सतरंगी - बूटी
   - नई - सपने
   - उत्तर - सदी
   - जड़ी - दिशा

   (ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—
   - रखवाली का वचन निभाए......... की कथा सुनाएँ। (कर्त्तव्यों/वीरों)
   - दुश्मन का मुख............. करता, जन-जन की पीड़ा को हरता। (काला/पीला)
   - जड़ी-बूटियाँ मिलें यहाँ पर.......... यहाँ के सुन्दर-सुन्दर। (दृश्य/तथ्य)
   - यह पहचान संस्कृति की है, इसमें.......निहित है अपनी, (शान/जान)
   - गर्व हमें है .... सरीखा, ले मुकाबला अड़ा हिमालय। (पिता/माता)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए—**

   (क) भारतमाता के मस्तक पर हिमालय किस तरह शोभित हो रहा है?

   (ख) इस कविता के आधार पर हिमालय किसका मुँह काला करता है?

   (ग) हिमालय पर कौन-कौन सी औषधियाँ मिलती हैं?

   (घ) हमारे देश की उत्तर दिशा की रखवाली कौन करता है?

   (ङ) हिमालय परोपकार का कौन सा कार्य कर रहा है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्यों में लिखिए—

(क) हिमालय हमारी सुरक्षा किस प्रकार करता है?

(ख) हिमालय को उम्मीदों का घड़ा क्यों कहा गया है?

(ग) हिमालय के प्रति हमारे क्या कर्त्तव्य हैं?

(घ) हिमालय को पिता के समान क्यों कहा गया है?

(ङ) नई सदी के कौन से करिश्मे देखकर हिमालय को शर्म आ रही है?

भाषा की बात

4. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—

कर्त्तव्य, मस्तक, संस्कृति, करिश्मा, अंबर।

5. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए—

दृष्य, अडीग, मुकट, हीमालय, निहीत, सदीयाँ, पिड़ा, हीत, बचन।

6. 'अ' उपसर्ग लगाकर शब्द बनाइए—

जैसे : डिग = अडिग

(क) मिट ....

(ख) टल ....

(ग) सीम ....

(घ) लिखित ....

7. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम शब्द लिखिए—

सपना, सदी, लाज, काला, पिता।

8. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द छाँटकर लिखिए—

(भागीरथी, गिरि, आकाश, शीश, नभ, पहाड़, माथा, जाह्नवी)

(क) गंगा - ....

(ख) पर्वत - ....

(ग) अंबर - ....

(घ) मस्तक - ....

9. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) मुँह काला करना - ....

(ख) उम्मीदों का घड़ा - ....

(ग) लाज से गड़ना - ....

अब करने की बारी

- 'हिमालय' कविता की तर्ज पर ही अपने विद्यालय, गाँव, माँ आदि पर आठ पंक्तियों की तुकबन्दी कीजिए।
- भारत के प्रमुख पर्वतों एवं नदियों की सूची बनाइए।
- अपने आस-पास के ऐसे पेड़-पौधों के नाम लिखिए जो औषधि के काम में आते हैं।

क्र.	**पेड़-पौधों के नाम**	**औषधि में प्रयोग**
1.	---------------------	---------------------
2.	---------------------	---------------------
3.	---------------------	---------------------
4.	---------------------	---------------------
5.	---------------------	---------------------

❑❑